दीनदयाल अंत्योदय योजना- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन -

झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत सखी मंडल के गठन के जरिए गांवों में विकास की नई इबारत लिखी जा रही है। राज्य में गरीबी उन्मूलन हेतु विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का लाभ गांव के गरीब परिवारों तक पहुंचाने में सखी मंडल एवं महिला ग्राम संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। महिला सखी मंडल एवं ग्राम संगठन ग्रामीण परिवारों को आजीविका के विभिन्न साधनों से जोड़कर सशक्त समाज के निर्माण में भी अपना योगदान सुनिश्चित कर रहे है।

दीन दयाल अंत्योदय योजना -राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के उद्देश्यों के तहत राज्य भर के गांवों में गरीब ग्रामीण परिवार की महिलाओं को सखी मंडल एवं महिला ग्राम संगठन के जरिए एक प्रभावी संस्थागत आधार से जोड़ा गया है ताकि वे आजीविका में सतत् वृद्धि के जरिए अपने परिवार की आय को बढ़ा सके और बेहतर वित्तिय सेवाएं प्राप्त कर सके। जिसके लिए चरणबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है । इस योजना के केंद्र में ग्राामीण महिलाएं ही है जो बदलाव के वाहक के रुप में कार्य कर रही है और इन्ही महिलाओं के जरिए गांवों में बदलाव की बयार जारी है।

मुख्य कार्यनीति -

- हर ग्रामीण गरीब परिवार की एक महिला को सखी मंडल के दायरे में लाया जा रहा है।
- वित्तिय सेवाओं की पहुंच ग्रामीण गरीब परिवारों तक सुनिश्चित की जा रही है।

- गरीब परिवारों को उनकी हकदारी पाने में समर्थ बनाया जा रहा है।
- स्थानीय परिस्थिती मुताबिक गरीब परिवारों को आजीविका के साधनों से जोड़ा जा रहा है।
- विभिन्न सरकारी योजनाओं को ग्रामीणों तक पहुंचाने एवं जागरुक करने में सखी मंडल की महत्वपूर्ण भूमिका।

महिला संगठनों का गठन एवं ग्राम विकास

राज्य भर के सभी जिलों में सखी मंडल एवं महिला ग्राम संगठन का गठन कर, इन संस्थाओं के क्रियाकलाप एवं दायरे को बढ़ाने के लिए सामुदायिक संसाधनों का सशक्तिकरण किया जा रहा है।

- राज्य के 24 जिलों के 138 प्रखण्डों में 8689 गांवों में सखी मंडल ग्राम विकास में योगदान दे रहे है।
- कार्यक्रम के अंतर्गत 11.10 लाख परिवारों को एकजुट किया गया एवं 88,260 सखी मंडल का गठन किया जा चुका है।
- 4200 महिला ग्राम संगठनों को प्रोत्साहित किया गया है जो विभिन्न सरकारी योजनाओं को गांव के आखिरी परिवार तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।
- करीब 5000 से ज्यादा ग्रामीण महिलाओं का क्षमतावर्धन कर कम्युनिटी कैडर के रुप में विकसीत किया गया है। जो कार्यक्रम को क्रियान्वित कर रही है।

- फोकस एरिया के तहत 71 प्रखण्डों में 4918 सखी मंडल का गठन किया गया है।

<u>वित्तिय समावेशन -</u>

राज्य के सभी ग्रामीण परिवारों तक वित्तीय सेवाएं पहुंचाने, प्राथमिक जरुरतों को पूरा करने एवं परिसंपत्ति बढाकर आजीविका को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत है। वहीं कर्ज की सुविधा सखी मंडल एवं ग्राम संगठन के स्तर पर भी उपलब्ध कराई गई है ।

- 39077 सखी मंडलों को 58.61 करोड़ रुपये चक्रिय निधी के रुप में उपलब्ध कराया गया।
- सामुदायिक निवेश निधी के रुप में 27540 सखी मंडलों को 157.71 करोड़ रुपये उपलब्ध कराया जा चुका है।
- सुदूर गांवों में बैंकिंग सुविधा पहुंचाने के लिए बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी पहल शुरू किया गया है। सखी मंडल की सैकड़ों बहनें बीसी सखी के रुप में गांवों में लाखों का लेन-देन कर रही है। वर्तमान में झारखंड ग्रामीण बैंक एवं बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से इसे क्रियान्वित किया जा रहा है।
- बैंक लिंकेज के तहत 22761 सखी मंडलों को 83.70 करोड़ की राशि उपलब्ध कराया जा चुका है।

<u>आजीविका प्रोत्साहन</u>

गांव के गरीब परिवारों की जरुरत के मुताबिक मुख्य तौर पर छोटे, सीमांत किसानों को सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी रुप से अधिकार संपन्न बनाने के लिए कार्य किया जा रहा है। गरीब परिवारों के विविध आजीविका एवं आय के विविध स्रोत पर विशेष रुप से बल दिया जा रहा है। जिसके तहत सखी मंडल की सदस्यों का क्षमतावर्धन कर आजीविका कृषक मित्र, वनोपज मित्र एवं पशु सखी के रुप में गांव में आय बढ़ाने एवं ग्राम विकास का नया जरिया तैयार किया गया है।

- करीब 2 लाख परिवारों के साथ एसआरआई खेती की गई है ।
- 42752 ग्रामीण परिवारों को बकरी पालन से जोड़ा गया है।
- करीब 4500 सखी मंडल की सदस्यों को समुदाय संसाधन व्यक्ति के रुप में विकसित किया गया है जो समुदाय को सस्ती दर पर सेवाएं एवं मदद करती है।
- 18000 किसानों के साथ लाह की वैज्ञानिक तरीके से खेती की गई है।
- 19 मिट्रीक टन ब्रुड उत्पादन महिला ग्राम संगठन के जरिए किया गया है।
- 18 मिट्रीक टन ईमली को उत्पादन प्रसंस्करण के जरिए किया गया है वहीं करीब 1500 से ज्यादा लोगों को ईमली उत्पादन से जोड़ा गया है।

<u>उद्यम प्रोत्साहन -</u>

सखी मंडल की बहनों को सस्ती दर पर कर्ज उपलब्ध कराकर जगह और जरुरत के मुताबिक विभिन्न उद्यमों से जोड़ा जा रहा है। एक ओर जहां सखी

मंडल की सदस्यों को प्रशिक्षित व्यापार साथी उद्यम से जुड़े गुर सीखाते है वहीं ग्रामीण महिलाएं उद्यमी के रुप में अपनी पहचान बना रही है। उद्यमी महिलाएं आज सखी मंडल , बैंक लिंकेज और मुद्रा योजना के जरिए लोन लेकर अपनी आजीविका को मजबूत कर रही है।

- राज्य के हर जिला एवं प्रखण्ड कार्यालय में सखी मंडल द्वारा संचालित आजीविका दीदी कैफे चलाने का निर्णय लिया गया है। राज्य भर में करीब 25 से ज्यादा आजीविका दीदी कैफे परिचालन में है।
- सखी मंडल की 2000 से ज्यादा बहनें सफल उद्यमी के रुप में अपनी पहचान बना चुकी है।
- गांव की जरुरत के मुताबिक सखी मंडल की बहनें उद्यम को चुन रही है।
- सेनेटरी नैपकीन, ईमली प्रसंस्करण के लिए यूनिट की स्थापना की गई है ।

<u>कौशल विकास</u>

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के अंतर्गत राज्य भर में आवासीय प्रशिक्षण केंद्र शुरू किए गए है. विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर में गांव के गरीब युवक/युवतियों का प्रशिक्षण कर उन्हें रोजगार से जोड़ा जा रहा है।

- राज्य भर में स्थित 24 प्रशिक्षण केंद्रों में विभिन्न ट्रेड्स के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

- वर्तमान में 19855 ग्रामीण गरीब युवा विभिन्न ट्रेड्स में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है एवं 15219 युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है।

<u>कनवर्जेंस</u>

सखी मंडल कनवर्जेंस के केंद्र बिंदू के रुप में प्रयोग हो रहे है। विभिन्न विभागों की योजनाओं को धरातल पर उतारने में सखी मंडल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

- राज्य के विभिन्न जिलों में सखी मंडल को कृषि संयंत्र बैंक के रुप में विकसीत किया गया है। ताकि ग्रामीण परिवार मामूली खर्च पर कृषि संयंत्र का उपयोग कर सके।
- कृषि एवं पशुपालन विभाग की विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन सखी मंडल के स्तर से किया जा रहा है।
- स्वच्छ भारत मिशन के धरातल पर उतारने में महिला ग्राम संगठन परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी की तरह कार्य कर रहे है। शौचालय निर्माण से लेकर उपयोग के लिए जागरुकता अभियान भी सखी मंडल के जरिए हो रहा है।
- 12793 शौचालय का निर्माण ग्राम संगठन के द्वारा किया गया है वहीं 5634 का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

बरखा रानी कच्छप सखी मंडल की सक्रिय सदस्य है । सखी मंडल से जुड़ने के बाद बरखा को बैंकिंग सखी कॉरस्पॉन्डेंट के रुप में चयन कर प्रशिक्षित किया गया। बरखा आज बीसी सखी के रुप में रांची के जोन्हा एवं आस-पास के दर्जन भर गांवों में बैंकिंग सेवाओं को आम लोगों तक पहुंचा रही है।

बैंक सखी बनने से पहले बरखा रानी कच्छप की जिंदगी परेशानियों का सबब बन चुकी थी।घर की स्थिती बहुत खराब थी, पति मजदूरी करते थे और बमुश्किल दो वक्त की रोटी का व्यवस्था हो पाता था। बरखा ने अपने परिवार की हालत सुधारने के लिए बीसी सखी का कार्य सीखने में बहुत मेहनत की। लेकिन परेशानियां जैसे बरखा के पीछे पड़ी थी, बरखा के पति ने उसको ये काम करने की इजाजत नहीं दी। बरखा ने हार नहीं माना और सखी मंडल की बहनों के सहयोग से बहुत ही मुश्किल से अपने पति को समझा पाई ।

आज बरखा रानी कच्छप बीसी सखी के रुप में काम करके अपने परिवार को एक अच्छी जिंदगी दे रही है। बरखा जोन्हा के लप्सर एवं आस पास के कई गांवों में बैंक वाली दीदी के नाम से जानी जाती है । बरखा अब तक करीब तीन सौ बैंक अकाउंट खुलवा चुकी है, वहीं तीन लाख से ज्यादा का ट्रांजेक्शन कर चुकी है।

बरखा बताती है कि मुझे सबसे ज्यादा संतोष तब महसूस होता है जब मैं अपने गांवों में बुजुर्गों को वृद्धा पेंशन देती हूं और मनरेगा के मजदूरों को घर बैठे नकदी

उपलब्ध कराती हूं। हम गांव के लोगों के लिए पांच -दस रुपये भी महत्वपूर्ण है और हम पहले जो बैंक जाने में बीस -चालीस रुपये खर्च होते थे अब वह पैसा भी हमारी जरुरतों को पूरा कर रहा है।